पांडुलिपि विज्ञान एवं लिपिविज्ञान डिप्लोमा पाठ्यक्रम

अध्ययन केन्द्र : वैदिक संशोधन मण्डल, पुणे (VSM-Pune)

विश्वविद्यालय : केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

2024-25

बृहत् परियोजना कार्य

प्रदत्तकार्य – प्रदत्त हस्तलेख का सम्पादन प्रविधि के आधार पर लघु भूमिका सहित सम्पादन

नाम – शरद चंद्र

नामाङ्कन संख्या - PD/24-25/1018

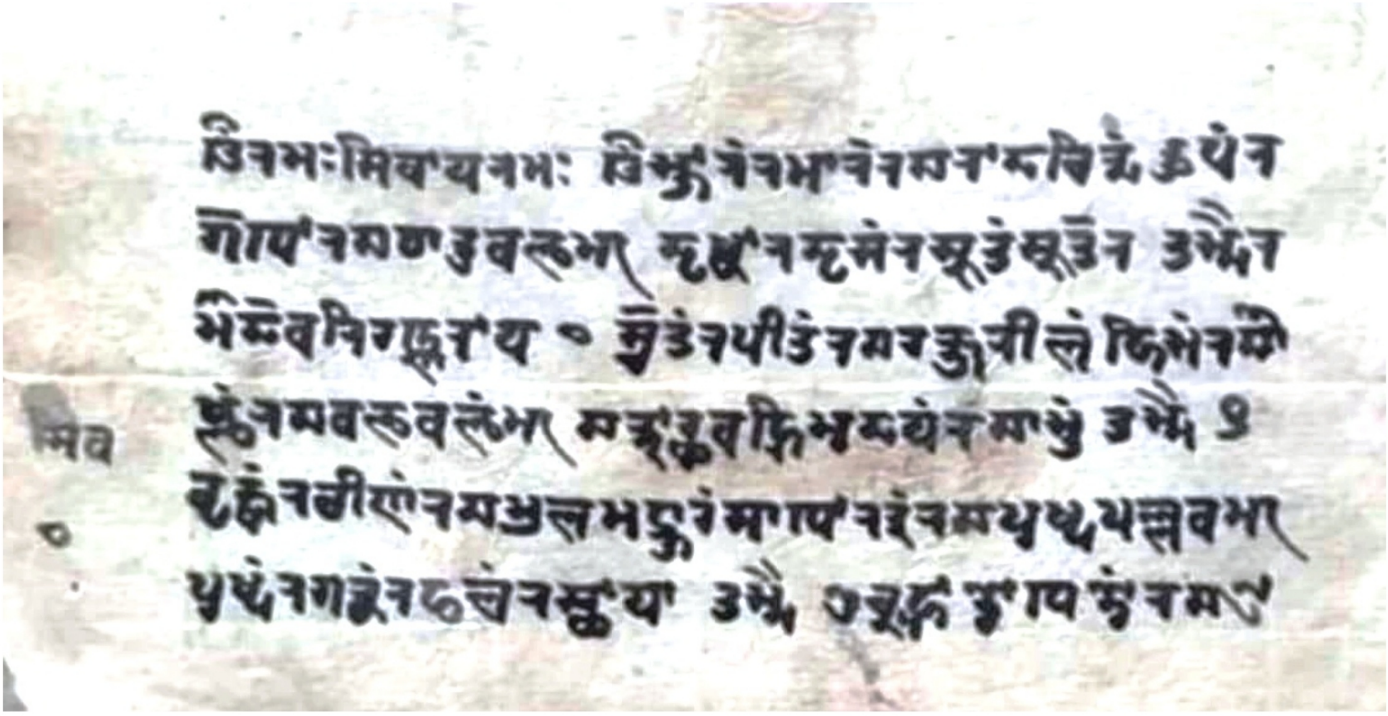

1

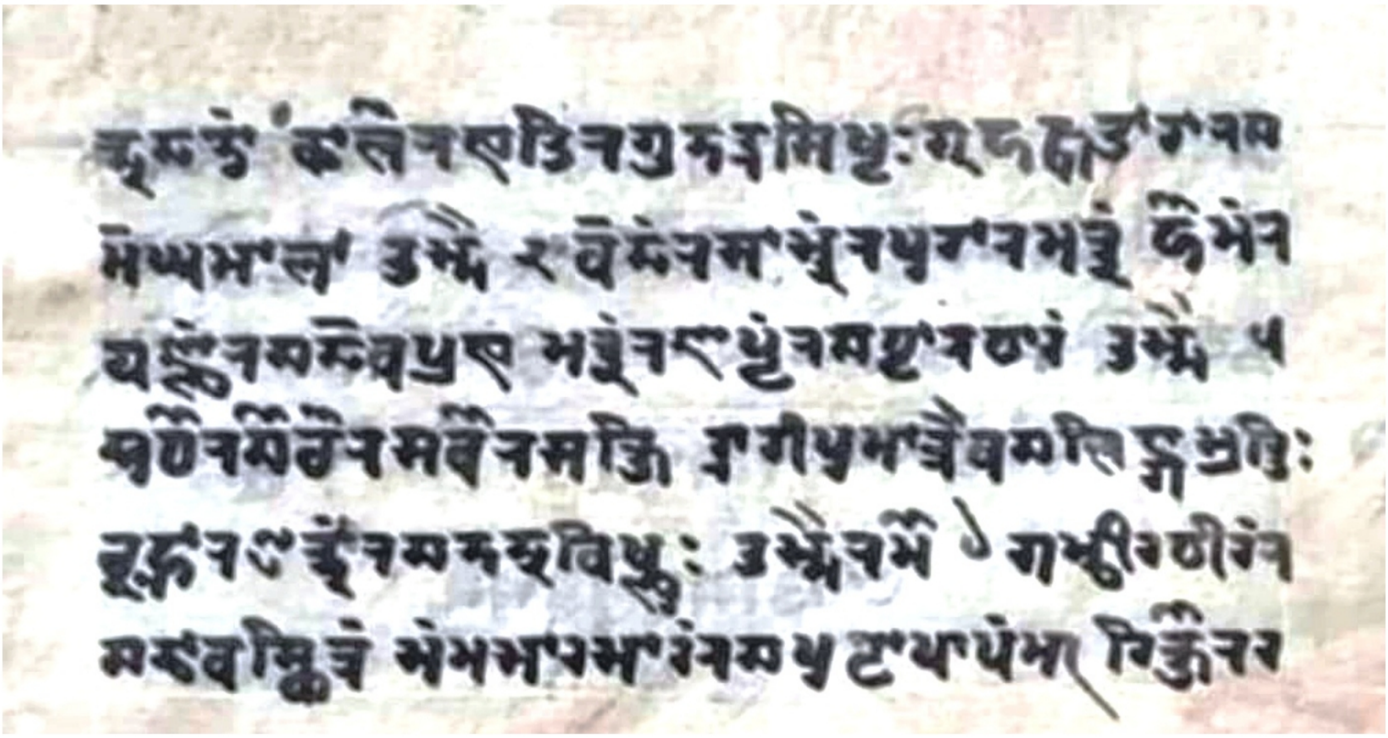

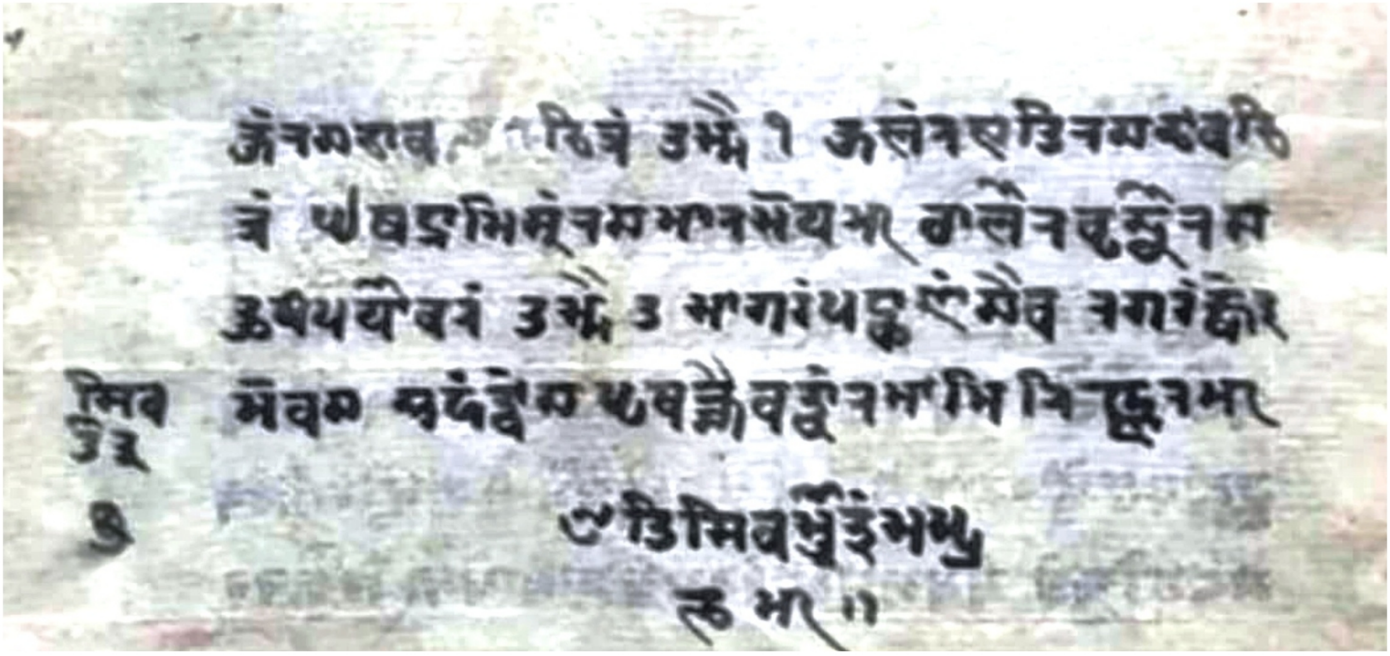

TOPIC बृहत् परियोजना कार्य (Major Project) DATE

शारदा लिपि की पाण्डुलिपि शिवस्तोत्रम् का देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण :—

१. ॐ नमः शिवाय नमः ॐ स्थानं न मातं न च नादबिन्दं भूपं न

२. गेखान च धातुवर्णम् दृष्टानदृशं न श्रुतं श्रुतेन तस्मै न

३. मो देव निरञ्जनाय ॥१॥ श्वेतं न पीतं न चर कृनीलं हिमं न चौ

४. वर्णं न च वर्ण वर्णम् चन्द्रार्क वह्नि मदयं न चास्तं तस्मै ॥२॥

५. वृक्षं न बीजं न च मूल मङ्कुरं शाखा नत्रं न च पुष्प पल्लवम्

६. पुष्पं न गन्धं न फलं नच्छाया तस्मै ॥३॥ ब्रह्माण्डखंडं न च इ

७. न्द्र दंडा कालेन रातिं न गुरूर्न शिष्यः ग्रहर्क्ष तारा न च

८. मेघमाला तस्मै ॥४॥ वेदं न शास्त्रं न पुराण मन्त्रं होमं न

९. यज्ञं न च देवपूजा मन्त्रं न जप्यं न च ध्यान धारं तस्मै ॥५॥

१०. अधो न चोर्ध्वोन शवो न शक्ति र्नाग पुमान्नैव च लिङ्ग मूर्तिः

११. ब्रह्मा न इन्द्रं न च दक्ष विष्णुः तस्मै नमो ॥६॥ गम्भीर धीरं न

१२. च भावाच्छिन्नं संमसार सारं न च पुण्यपापम् रिक्तो नर

TOPIC .... DATE......................................

१३. क्तं न च भावभिन्नं तस्मै ॥७॥ कुलं न जाति न च
भावभि

१४. न्नं पृथङ्ग मिश्रं न च मानसेयम् बालो न वृद्धो न च

१५. भूरूप यौवनं तस्मै ॥ ८ ॥ सागरं पङ्कजं चैव नगरं क्षेत्र

१६. मेव च अहं त्वां च पृथक्चैव त्वां नमामि निरञ्जनम्

इति शिवस्तोत्रं सम्पू
र्णम् ॥

TOPIC .... DATE..............................

भूमिका :

प्रस्तुत शिवस्तोत्रम् शारदा लिपि में हस्तलिखित है। इस शिवस्तोत्रम् में शिव तत्त्व क्या है? उस निरञ्जन शिव के विषय में वर्णन है। यह अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्तों को ९ श्लोकों में वर्णन है। इसका मुख्य विषय यह है कि यह आत्म तत्त्व ही निरञ्जन शिव है। यह निराकार शिव तत्त्व शरीर, मन, बुद्धि और इन्द्रियों से परे है।

मैं स्थान और मान नहीं हूँ। वह निरञ्जन देव न नादबिन्दु है। न राजा है न पर्वतों के अन्दर की बहुमूल्य रत्न है। वह न स्वर्ण आदि धातु है। वह न दृष्ट और न अदृश्य है। वह न श्रुत है न अश्रुत है। ऐसे निरञ्जन देव के लिए नमस्कार है।

वह न श्वेत है न पीत है। वह न हिम के समान ठण्डा है न ऊष्ण है। वह निरञ्जन शिव ब्राह्मण वर्ण आदि चार वर्णों से परे है। वह शिव तत्त्व गुणातीत, कालातीत, निराकार, निर्विकार, निर्गुण, निर्विशेष परब्रह्म है।

TOPIC .... DATE ....

वह असीम है, देश-काल से परे है। उस निरञ्जन
के चन्द्र, सूर्य और अग्नि- ये तीन नेत्र भी नहीं है।
वह न उदय है और न अस्त है। उस निरञ्जन
एकरस शिव के लिए नमस्कार है।
वह न वृक्ष है, न बीज है। न मूल है, न अंकुर है।
न शाखा है न पुष्प और पल्लव है। वह न पुष्प,
न गन्ध न फल न छाया है उसके लिए नमस्कार।
वह न ब्रह्माण्डखण्ड, न इन्द्र का वज्र, न दण्ड
न काल, न गुरु न शिष्य। न ग्रह, नक्षत्र, तारा
और न मेघमाला उस निरञ्जन देव के लिए
नमस्कार है।
वह न वेद है न शास्त्र, न पुराण,
न मन्त्र न होम, यज्ञ न देवपूजा न मन्त्र
न जप, न ध्यान उसके लिए नमस्कार है।
वह न नीचे है न ऊर्ध्व है न शर्व न शक्ति
न नाग न मनुष्य, न लिङ्ग न मूर्ति।

TOPIC .... DATE........

वह न ब्रह्मा न इन्द्र न दक्ष न विष्णु
ऐसे निरञ्जनदेव के लिए नमस्कार है।
शिवस्तोत्र की इस पाण्डुलिपि का लिप्यन्तरण करने से यह ज्ञात हुआ कि इस पाण्डुलिपि में कई स्थानों पर कुछ शब्द अशुद्ध हैं अतः हमने यहाँ सम्पादन के लिए प्रतिलेखन पद्धति (Copy-Text Editing) को अपनाया है।
सर्वप्रथम अनुसन्धान करने के पश्चात् इसमें संशोधन करना चाहिए। शारदा लिपि की एकल पाण्डुलिपि होने के कारण इस शिवस्तोत्र की वाचना निर्धारण करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
इस पाठ में संशोधन करने के पश्चात् आई हुई अशुद्धियों को हटाकर शब्दों के अर्थ की समीक्षा करते हुए पाठ सुधार करते हैं तथा शुद्ध पाठ सम्पादन करते हैं। प्रतिलेखन पद्धति को अपनाकर हम शिवस्तोत्र की पाण्डुलिपि का पाठ

TOPIC .... DATE ....

शुद्ध करते हैं। प्रतिलेखन पद्धति में दो प्रकार से पाठ शुद्ध कर सकते हैं →

१. पाठ को शुद्ध करके पुनः शारदा लिपि में ही शुद्ध पाठ को लिखा जाये।

२. देवनागरी में लिप्यन्तरण करने के बाद पाठ को शुद्ध करके देवनागरी लिपि में ही शुद्ध पाठ का सम्पादन किया जाये।

आइये अब हम देवनागरी लिपि में ही पाठ का सम्पादन करते हैं।

TOPIC .... DATE....................

शिवस्तोत्र का पाठ सम्पादन :-

ॐ नमः शिवाय नमः। ॐ स्थानं न मानं न च

नादबिन्दुं भूपं नगो खान च धातुवर्णम्। दृष्टानदृशं न

श्रुतं श्रुतेन तस्मै नमो देव निरञ्जनाय ॥१॥

श्वेतं न पीतं न च रक्त नीलं हिमं न चौष्णं

न च वर्णवर्णम्। चन्द्रार्कवह्निमुदयं न चास्तं

तस्मै नमो देव निरञ्जनाय ॥२॥

वृक्षं न बीजं न च मूलमङ्कुरं शाखा नत्रं न पुष्प पल्लवम्

पुष्पं न गन्धं न फलं नच्छाया तस्मै नमो देव निरञ्जनाय॥३॥

ब्रह्माण्ड खण्डं न च इन्द्र दण्डं कालेन रति न गुरुर्नशिष्य:

ग्रहर्क्षतारा न च मेघमाला तस्मै नमो देव निरञ्जनाय॥४॥

वेदं न शास्त्रं न पुराण मन्त्रं होमं न यज्ञं न च देवपूजा।

मन्त्रं न जाप्यं न च ध्यानधारं तस्मै नमो देव निरञ्जनाय॥५॥

अधो न चोर्ध्वो न शर्वो न शक्तिर्नाग पुमान्नैव च लिङ्गमूर्तिः।

ब्रह्मा न इन्द्रं न च दक्ष विष्णु तस्मै नमो देव निरञ्जनाय॥६॥

TOPIC .... DATE..........

गम्भीर धीरं न च भावच्छिन्नं संसार सारं न च

पुण्यपापं। रिक्तो न रक्तं न च भावभिन्नं तस्मै

नमो देव निरञ्जनाय ॥७॥

कुलं न जाति न च भावभिन्नं

पृथक्त्वमिश्रं न च मानसेयम्।

बालो न वृद्धो न च पुष्पयौवनं

तस्मै नमो देव निरञ्जनाय ॥८॥

आगारं पङ्कजं चैव नगारं क्षेत्र मेव च।

अहं त्वां च पृथक्चैव त्वां नमामि निरञ्जनम् ॥९॥

इति शिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥